राष्ट्रवादी आन्दोलन में महिलाएँ

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका का प्रश्न अनुत्तरित नहीं रहा है। महिलाओं की भूमिका के संदर्भ में सवाल मात्र इतना रहा कि किस काल से महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। इस संदर्भ में एक प्रभावी मत यह है कि यद्यपि 19वीं सदी के अंत तक महिलाओं का प्रश्न उठने लगा था तथापि स्त्रियों को घर की चारदीवारी से मुक्त कर उसे सार्वजनिक जीवन में प्रवेश दिलाने का श्रेय गांधी जी को जाता है, परंतु गौर से देखने पर पता चलता है कि अगर इस प्रश्न को यहीं पर समाप्त कर दिया जाए तो गांधी जी के आगमन से पूर्व सार्वजनिक जीवन में मौजूद स्त्रियों की भूमिका के साथ न्याय नहीं हो पाएगा। अत: यह कहना ज्यादा उचित होगा कि गांधी जी के आगमन से पूर्व से ही स्त्रियों का प्रश्न तथा सार्वजनिक जीवन में स्त्रियों की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है परंतु गांधी जी ने स्त्रियों के प्रश्न को पुनर्जीवन प्रदान करते हुए उनकी सक्रियता हेतु अनुकूलतम वातावरण तैयार किया। साथ ही सीता, द्रोपदी तथा दमयंती जैसी नारी आदर्शों को उद्धृत करते गांधी जी ने उनके पतियों और पिताओं को आश्वस्त करने की कोशिश भी की कि राजनीतिक रूप से सक्रिय होने के बावजूद भी महिलाएँ अपने परिवार के विरुद्ध बगावत नहीं करेंगी। यही कारण है कि पुरुषों के साथ समानता की नारीवादी मांग राष्ट्रवादी मांग के साथ कभी भी एकीकृत नहीं हो पाई, उस समय भी नहीं जबकि राष्ट्रवादी आन्दोलन का महिलाकरण हुआ।

ब्रिटिश काल में औपनिवेशिक नीतियों की तमाम सीमाओं के बावजूद नारी शिक्षा एक सकारात्मक पहलू था जिसने स्त्रियों की मुक्ति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिक्षा के रथ पर सवार महिलाओं में जिस राष्ट्रीय जागृति का उद्भव हुआ उसमें सभी तबके, सभी उम्र एवं सभी वर्ग की महिलाओं ने भाग लिया। यद्यपि पुरुषों की तुलना में इनकी भागीदारी कम रही तथापि इसने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को वैधानिकता प्रदान की। इसने शासन करने के ब्रिटिश अधिकारों पर भी प्रश्नचिह्न उपस्थित कर दिया। ध्यातव्य है कि 19वीं सदी के प्रारंभ में ब्रिटिश सत्ता ने नारियों की निम्न सामाजिक स्थिति के उत्थान के प्रश्न से स्वयं को वैचारिक आधार पर जोड़ कर औपनिवेशिक शासन के औचित्य को ढूंढने का प्रयास किया था। जहाँ शिक्षा, सामाजिक सुधार और महिलाओं के अधिकार के प्रश्न ने कुछ प्रगतिशाली महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया वहीं विदेशी शासन से देश को मुक्ति दिलाने के प्रश्न ने सभी वर्गों की रुचि को जागृत किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को दो चरणों में बांटा जा सकता है। पहला कांग्रेस की स्थापना से पूर्व तथा दूसरा कांग्रेस की स्थापना के पश्चात। कांग्रेस की स्थापना से पूर्व जो भी आंदोलन संगठित हुआ उसमें भी महिलाओं की भागीदारी स्पष्ट रूप में दिखती है। उदाहरण के लिए कित्तुर विद्रोह का नेतृत्व नारी चेन्नमा ने किया तो 1857 के सैनिक विद्रोह को रानी लक्ष्मीबाई तथा बेगम हजरत महल जैसी महिलाओं ने नेतृत्व प्रदान किया। इस काल के साहित्यों में भी महिलाओं की भागीदारी का स्पष्ट रूप में वर्णन मिलता है। उदाहरण के लिए, बंकिम चन्द्र के आनंदमठ का भावात्मक उद्वेलन पैदा करने वाला अंश 'वंदे मातरम' अर्थात् अपनी मातृभूमि की रक्षा का आह्वान

Scanned with CamScanner

यद्यपि राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने हेतु महिलाओं को किया गया आह्वान नहीं था तथापि इसके द्वारा आदर्शीकृत स्त्रीत्व को राष्ट्रवाद से जोड़ने की कोशिश की गई थी। 1802 के इल्बर्ट विल के प्रश्न पर बंगाली महिलाओं ने इसका समर्थन करते हुए वायसराय को पत्र लिखा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को नया आयाम प्राप्त हुआ। 1889 में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में स्वर्णकुमारी घोषाल नामक महिला उपन्यासकार तथा प्रथम महिला स्नातक व भारत की प्रथम महिला चिकित्सक कादंबिनी गांगुली ने बतौर प्रतिनिधि भाग लिया। इसके बाद के अधिवेशनों में भी महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी होती रही। कभी-कभी विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों के रूप में और अधिकांशतः पर्यवेक्षक के तौर पर इनकी भागीदारी सांकेतिक और प्रदर्शन मूलक रही और इनके द्वारा सामूहिक गान और स्वागत गान जैसे कार्यक्रमों में शिरकत की गई।

1905 के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी की दो प्रवृत्तियाँ विकसित हुई जिनमें एक तो मुख्य धारा के साथ जुड़ी हुई थी तथा दूसरी क्रांतिकारी आंतकवाद तथा वामपंथी विचारधारा के निकट थी। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में हुए स्वदेशी आन्दोलन बंगाल के भीतर महिलाओं की भागीदारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण रही। इस आन्दोलन में शामिल महिलाओं ने आन्दोलन के समर्थन में प्रदर्शन के साथ स्वदेशी वस्तुओं की खरीददारी कर इस आन्दोलन को नया आयाम प्रदान किया। इसी समय ननीवाला जैसे महिलाओं ने क्रांतिकारी संगठनों की सदस्यता लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों, शस्त्रास्त्रों तथा क्रांतिकारियों को संरक्षण देने का कार्य किया। स्वदेशी आन्दोलन के प्रति सहानुभूति रखनेवाली इन बंगाली महिलाओं के क्रियाकलाप कांग्रेस द्वारा प्रदत्त भूमिका से भिन्न थे। स्पष्ट है कि बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका पुरुषों के समान नहीं रही बल्कि उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों को छुपाने की अपनी संरक्षणवादी पारंपरिक भूमिका को निभाया। मैडम कामा ने विदेशी धरती पर भारतीय राष्ट्र की अवधारणा को मूर्त रूप देते हुए इसके प्रतीक में राष्ट्रीय झंडा फहराया। 1907 में सूरत कांग्रेस के पश्चात तथा 1909 के मार्ले मिन्टों रिफार्म के कारण विभाजित हो चुके राष्ट्रवादी आन्दोलन को गति प्रदान करने में ऐनी बेसेंट नामक आयरिस महिला की व्यापक भूमिका रही। उन्होंने स्वशासन की मांग करते हुए होमरूल लीग आन्दोलन प्रारंभ किया जिसने राष्ट्रवादी आन्दोलन को नई दिशा प्रदान की।

भारतीय मानचित्र पर गांधी जी के उभरने के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी का नया चरण प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए गांधी जी ने पौराणिक कथाओं का भी सहारा लिया जिनमें ब्रिटिश शासकों की तुलना रावण से की गई जिसने भारत माता रूपी सीता का अपहरण कर लिया था। पौराणिक आदर्श चरित्रों को उद्धृत करते हुए गांधी ने प्रकारांतर से उनके पुरुष सहयोगियों को भी आश्वस्त करने का काम किया कि राजनीति में उनकी भागीदारी का मतलब सामाजिक एवं पारिवारिक मर्यादा के प्रति इनका विद्रोह नहीं है। गांधी जी द्वारा उच्च नैतिक आदर्शों पर जोर दिए जाने के कारण वे निश्चित थे कि घर से बाहर निकलकर

Scanned with CamScanner

राजनीति में भाग लेने के क्रम में महिलाएँ सुरक्षित और संरक्षित होंगी। यहाँ यह ध्यातव्य है कि आन्दोलन के लिए गांधी जी द्वारा अपनाई गई अहिंसा और सत्याग्रह की व्यापक रणनीति ने भी महिलाओं की व्यापक भागीदारी को संभव बनाया और राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आंदोलन में परिणत कर दिया। गांधीवादी आंदोलन के प्रत्येक चरण में इस बात पर आवश्यक बल दिया कि महिलाओं की भागीदारी के बगैर आंदोलन में संपूर्णता नहीं आयेगी। कांग्रेस ने 1921 में 6-13 अप्रैल वाले सप्ताह को सत्याग्रह सप्ताह घोषित किया तथा अपील की कि राजनीति में रुचि रखने वाली महिलाएं सभा को आयोजित कर कांग्रेस के प्रति अपने समर्थन का इजहार करें। इस तरह के एक सम्मेलन में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में स्वतंत्र महिला संगठन 'राष्ट्रीय स्त्री संघ' की स्थापना की। सी.आर.दास की बहन उर्मिला देवी ने महिलाओं की एक सभा का आह्वान किया तो उनकी पत्नी बसंती देवी ने खादी वस्त्र का प्रचार प्रसार किया। गाँधी जी के अपील ने मध्य वर्गीय महिलाओं को भी जागृत करने का काम किया। गाँधी जी की सभा में सर्वाधिक चंदा महिलाओं के आभूषण के रूप में ही होता था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन तक आते-आते महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी का स्तर काफी बढ़ गया। इस दौरान महिलाओं की भागीदारी में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक भिन्नता आई। इस दशक में महिलाओं के शारीरिक कमजोरी सम्बन्धी जीव विज्ञान शास्त्री मिथक टूटा और क्रांतिकारी गतिविधियों जैसे हिंसक कार्यों में महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी हुई। 1930-32 के दौरान महिलाओं द्वारा किये गये पिकेटिंग और विरोध प्रदर्शनों ने देशी तथा विदेशी प्रेस का ध्यान भी खींचा। धरासना नामक नमक भंडार पर सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं ने जो अदम्य वीरता दिखलाई उसका नमन 'वेव मीलर' नामक अमेरिकी पत्रकार ने भी किया। बंगाल की महिलाओं ने गाँधीवादी आन्दोलन में भागीदारी के बजाय क्रांतिकारी आतंकवादी कार्यों में ज्यादा नाम कमाया। प्रीतिलता वाडेडर तथा कल्पना दत्त ने इन महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया। यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने वाली अधिकांश महिला छात्रा थीं। दिसंबर 1931 में शांति तथा सुनीति चौधरी नामक बहनों ने स्टीवेंस नामक मजिस्ट्रेट की हत्या उस समय कर दी जब वह उनके द्वारा दिये गए प्रतिवेदन को पढ़ रहा था। वीना दास आदि युवतियाँ भी इसी की एक कड़ी के रूप में थी।

मद्रास में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बम्बई तथा बंगाल की तुलना में कम रही। महिलाओं ने पिकेटिंग तथा विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया लेकिन यहाँ की महिलाओं ने क्रांतिकारी आतंकवाद की तरफ रुचि नहीं दिखाई अतः इन्हें हिंसक पुलिस दमन का शिकार भी नहीं होना पड़ा। परंतु पूरे देश में मद्रास के महिलाओं की गिरफ्तारी प्रथम राजनीतिक महिला गिरफ्तार थी जब मार्च, 1931 में नमक कानून भंग करने के जुर्म में राज गोपालाचारी के साथ रुक्मिणी लक्ष्मीपति को गिरफ्तार कर लिया गया। उत्तर भारत में इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली तथा लाहौर की महिलाओं ने जन-प्रदर्शनों में भाग लिया और उन लोगों को हतप्रभ कर दिया जो सम्मानित महिलाओं को गलियों में बिना पर्दे के देखने के आदि न थे। उत्तर भारत के महिला आन्दोलन का नेतृत्व कुछ विशिष्ट परिवारों से उभर कर आया यथा नेहरू तथा जुत्शी परिवार। इलाहाबाद में नेहरू परिवार की महिलायें घर-घर जाकर महिलाओं से आन्दोलन में शामिल होने का आग्रह करती थीं। स्वरूप रानी नेहरू तथा कमला नेहरू

Scanned with CamScanner

ने महिलाओं को राष्ट्रवादी आन्दोलन में भाग लेने का भावनात्मक आह्वान किया।

भारत छोड़ो आंदोलन के हिंसक रहने की वजह से सामान्य महिलाओं की भागीदारी कम देखी गई। कांग्रेस की पहली पंक्ति के नेताओं की गिरफ्तारी के बाद अरूणा आसफ अली ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इसी प्रकार उषा मेहता ने गुप्त रेडियो प्रसारण का संचालन कर आंदोलन को गति प्रदान की। इस काल में आजाद हिंद फौज के बैनर तले रानी झांसी नामक महिला सैन्य कमान का गठन किया गया जिसका नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल के हाथों में था।

स्वतंत्रता आन्दोलन में स्त्रियों की भागीदारी ने नारी अधिकारों के लिए चल रहे आंदोलन का स्वरूप भी निर्धारित किया। इसने महिलाओं ने अपनी सामाजिक परिस्थिति को भी सुधारने का काम किया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान अधिक से अधिक महिलायें राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुई और कुछ पुरुष तो उनके साथ बतौर सहकर्मी प्रशिक्षित हुए तथा काम करना सीखा। किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी की अपनी सीमा भी रही। महिलायें राजनीतिक गतिविधियों में अपने परिवार की अनुमति के पश्चात शामिल हुई थीं न कि उनकी भागीदारी लैंगिक विभेद-विरोधी उनकी विचारधारा के कारण परिवार तथा समाज के प्रति उनके विद्रोह का परिणाम था। फलतः राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय अधिकांश महिलाओं ने अपनी पतित बहनों (देवदासियों तथा वेश्याओं) के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए उनके साथ खड़ा होने के बजाय अपने सम्मान को चुनना पसंद किया। इस कारण पतित नारियों की गतिविधियों को राष्ट्रीय आन्दोलन के अंदर हतोत्साहित किया गया जो महिलावादी आन्दोलन की दृष्टि से नकारात्मक संकेत था।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान प्रदर्शनकारी महिलाओं ने अखिल भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधि होने का दावा किया लेकिन उच्च वर्गीय और मध्यम वर्गीय हिन्दू महिलाओं के अलावा अन्य वर्गों की महिलाओं की भागीदारी अत्यंत सीमित रही और कांग्रेस के संगठनकर्त्ताओं ने उनकी भागीदारी को बढ़ाने की कभी कोशिश नहीं की।

उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलनों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी रही और इसका प्रभाव स्वतंत्र भारत में महिलाओं की सामाजिक-राजनीतिक धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति पर पड़ा और स्त्रियों को संवैधानिक समानता भी प्रदान की गई।

****

Scanned with CamScanner